प्रगतिवादी ~~कवी~~ कवियों में नागार्जुन एवं त्रिलोचन का नाम जिस सम्मान के साथ लिया जाता है उतना ही आदर एवं श्रद्धा के साथ केदारनाथ अग्रवाल का नाम भी।

केदारनाथ के काव्य में छायावाद की तरह प्रकृति और मनुष्य का समीकरण नहीं साहचर्य है। प्रकृति भी यहाँ अपने विराट रूप में उतनी नहीं जितनी सामान्य रूप में है। कहीं आकाश और पहाड़ी की रात - प्रसंग - विराट बिंब की रचना करते हैं पर अधिकतर आस-पास की मैदानी प्रकृति उनके काव्य में आती है और वह तब बिम्ब-विधान भी कैसा घरेलू है।

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

सुरेश बाँधे कोटा-सा चना जो साधारण जन के सहज आत्मविश्वास का प्रतीक है। साधारण जन और साधारण प्रकृति का यह आश्चर्य केदारनाथ अग्रवाल की काव्य क्षमता का मुख्य स्रोत है। घर-आँगन के आत्मीय बिम्ब उनकी जनवादी राजनैतिक चेतना को प्रामाणिकता देते हैं जहाँ वह नारा न रहकर अनुभूति बन जाती है। हिन्दी कविता में प्रवाहित परिवार का राग प्रकृति से संपृक्त होकर कैसे और प्रभावशाली बन जाता है, यह इस पंक्ति में दृष्टव्य है :-

"धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने / मैके में आई बेटी की तरह मगन है"

धूप और मैके में आई बेटी भारतीय

घर-आँगन की सहज पहिचान है, एकदम से साधारण एवं किसी भी नाटकीयता एवं अतिरंजना से मुक्त गृहस्थ जीवन में प्रणय और संयोग के दृश्यों को महत्व देने वाले कवि विरले हैं। केदार उनमें से एक हैं' —

" भूल सकता मैं नहीं,
ये कुच - खुले दिन,
ओठ से चूमे गए
उजले। "

केदारनाथ अग्रवाल की प्रमुख रचनाएँ निम्नवत हैं' — 'युग की गंगा', 'नींद के बादल' 'फूल नहीं रंग बोलते हैं', 'आग का आईना', 'समय समय पर', 'अपूर्वा' आदि।

केदार की कविताओं में 'प्रकृति' के विविध रूप चित्रित हुए हुए हैं। यह प्रकृति खेतों, खलिहानों

बाग-बगीचों वाली वास्तविक प्रकृति है, कल्पनालोक का कोई उद्यान नहीं है। चने के पौधे की शोभा अलसी के साथ कैसी फब रही है। —

" एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है,
बीच में अलसी हठीली,
देह की पतली कमर की है लचीली।"

अग्रवाल जी की प्रकृति छायावादी प्रकृति से बिल्कुल अलग है। इसमें यथार्थता और ग्रामीण परिवेश की खुशबू है। —

" आसमान की ओढ़नी ओढ़े
धानी पहने फसल घघरिया,

राधा बन की धरती नाची
नाचा हँसमुख कृषक सँवरिया।

प्रवर केदारनाथ जी की कविताओं में बुंदेलखंड की धरती की सौंधी महक है। केन नदी के सौंदर्य पर मुग्ध कवि ने उसका चित्रण एक चंचल युवती के रूप में किया है:—

"नदी एक नौजवान ढीठ लड़की है,
जो पहाड़ से मैदान में आई है,
जिसकी आँखें खुली और लहरों से भरी हैं,
पेड़ हैं कि उसके पास ही रहते हैं
जैसे कई मस्त नौजवान लड़के हैं।"

प्रकृति के प्रतीकों का प्रयोग कवि ने जनवादी स्थितियों की अभिव्यक्ति के लिए भी किया है। कवि का मन खेत-खलिहान की प्रकृति में अधिक रमा है:—

"ज्वार खड़ी खेतों में ऊँची लहराती है,
कहती है मौ यौवन ओढ़के देना।"

वसंत में प्रकृति का रूप निखर आता है। 'वसन्ती हवा' में कवि ने हवा का मानवीयकरण किया है और उसे मस्त मौला मुसाफिर का रूप दिया है:-

"हवा हूँ हवा मैं वसन्ती हवा हूँ।
बड़ी मस्तमौला नहीं कुछ फिकर है,
बड़ी ही निडर हूँ, जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ, मुसाफिर अजब हूँ।"

इस प्रकार केदार के प्रकृति चित्रण में छायावादी भावुकता रोमानियत एवं कल्पनाशीलता का नितांत अभाव है। इनकी प्रकृति जीवन से जुड़ी हुई है, उपयोगितावादी प्रकृति है।

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner